

बाइबिल व्याख्यान 6 की मैथ्यूसन कहानी - रहस्योद्घाटन

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

बाइबिल की कहानी पर डॉ. डेव मैथ्यूसन का यह छठा और अंतिम व्याख्यान है। इस व्याख्यान में, वह सामान्य पत्रियों का इलाज करेंगे और फिर प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के साथ समापन करेंगे। जैसा कि यहां उनके सभी व्याख्यानों में होता है, वह पांच विषयों, वाचा, भगवान के लोग, मंदिर, भूमि और राजत्व का विकास करेंगे।

अब, डॉ. डेव मैथ्यूसन। इस अंतिम व्याख्यान में हम जो करना चाहते हैं वह दो चीजें हैं, कहानी के इन पांच विषयों को इब्रानियों के नए नियम के शेष पत्रों से लेकर जोहानाइन पत्रों के कुछ संदर्भों तक खोजें। और मैं जो करने जा रहा हूं, यह उतना व्यापक नहीं होगा जितना हमने पॉलिन पत्रियों या गॉस्पेल के साथ किया था, लेकिन मैं आपको केवल प्रदर्शित करने के लिए पर्याप्त और विभिन्न भागों में पर्याप्त उदाहरण देना चाहता हूं जिन्हें कहा जाता है। सामान्य पत्रियाँ आमतौर पर यह प्रदर्शित करने के लिए होती हैं कि, फिर से, विषय या कहानी और उसके पाँच विषय या तो मान लिए गए हैं या वे लेखक के उद्देश्य की सेवा में सामान्य पत्रों के कई खंडों में स्पष्ट रूप से सामने आते हैं।

जाहिर है, लेखक जिस उद्देश्य के लिए लिख रहे हैं या जिन जरूरतों को वे संबोधित कर रहे हैं, उसके आधार पर विषय या कहानी के विभिन्न हिस्सों पर जोर दे सकते हैं। लेकिन फिर भी, जब हम यह सब एक साथ रखते हैं, तो हम देखते हैं कि इस कहानी के हिस्से के रूप में ये पांच मुख्य विषय सामान्य पत्रों में अलग-अलग स्थानों पर सामने आते हैं। और फिर दूसरी चीज़ जो हम करेंगे वह यह देखकर समाप्त होगी कि कैसे ये विषय रहस्योद्घाटन की अंतिम दृष्टि में कहानी के समापन और कहानी के निष्कर्ष के रूप में चरमोत्कर्ष पर पहुँचते हैं जो अभी तक नहीं और जो पहले से ही है उसकी परिणति पर जोर देता है। शेष नए नियम में यीशु और उनके चर्च और उनके अनुयायियों के माध्यम से उद्घाटन किया गया।

तो, आइए देखें कि सामान्य पत्रियों या रहस्योद्घाटन के अभी के लिए शेष नए नियम के रूप में क्या जाना जाता है। लेकिन उदाहरण के लिए, भगवान के लोगों का विषय। एक जगह जहां आप इसे सबसे स्पष्ट रूप से व्यक्त पाते हैं वह 1 पतरस और अध्याय 2 और छंद 9 और 10 में एक पाठ है, जहां, फिर से, मैं चाहता हूं कि आप ध्यान दें कि पुराने नियम की भाषा पुराने नियम की भाषा है जो ईश्वर के लोगों के रूप में इज़राइल पर लागू होती है। अब यह चर्च में परमेश्वर के नए लोगों के रूप में, परमेश्वर के पुनर्स्थापित लोगों के रूप में लागू होता है।

तो, पतरस 1 पतरस अध्याय 2 और 9 और 10 में कहता है, "...परन्तु तुम एक चुना हुआ वंश, एक राजसी याजक समाज, एक पवित्र जाति, परमेश्वर की अपनी प्रजा हो, ताकि तुम उसके शक्तिशाली कार्यों का प्रचार कर सको जिसने बुलाया है आप अंधेरे से निकलकर उसकी अद्भुत रोशनी में आ गए हैं। एक समय आप लोग नहीं थे, लेकिन अब आप परमेश्वर के लोग हैं। एक बार आपको दया नहीं मिली थी, लेकिन अब आपको दया मिली है।" इसलिए, इस पाठ को उस चर्च पर लागू करने में जिसे पीटर संबोधित कर रहा है, वह स्पष्ट रूप से उन्हें भगवान के लोगों की बहाली के वादे की अंतिम पूर्ति के रूप में स्वीकार करता है।

तो वह भाषा जो मूल रूप से इज़राइल को संदर्भित करती थी अब चर्च को भगवान के लोगों के रूप में लागू की जाती है। हमने उनमें से एक के बारे में कहा, और अन्य पाठ भी हैं जिन्हें हम देख सकते हैं, लेकिन लोगों से निकटता से संबंधित अन्य विषयों में से एक वाचा है। परमेश्वर अपने लोगों के साथ एक अनुबंधित संबंध में प्रवेश करता है।

यही बात उन्हें उनके लोगों के रूप में स्थापित करती है। वाचा का सूत्र, मैं तुम्हारा परमेश्वर होऊंगा, तुम मेरी प्रजा होगे। जिस स्थान पर हम संभवतः वाचा की भाषा को सबसे स्पष्ट रूप से देखते हैं वह इब्रानियों की पुस्तक में पाया जाता है जो वास्तव में यिर्मयाह अध्याय 31 से भाषा लेती है और अब इसे यीशु मसीह के व्यक्तित्व में उनकी मृत्यु में एक बलिदान के रूप में पूरा होने के रूप में देखती है। पुराने नियम के बलिदान।

अब यीशु की मृत्यु यिर्मयाह अध्याय 31 की नई वाचा का उद्घाटन करती है। तो यहां इब्रानियों का अध्याय 10 है और श्लोक 8 से शुरू होता हूं और मैं 17 तक पढ़ूंगा। और फिर, इसमें से अधिकांश यिर्मयाह 31 का काफी विस्तारित उद्धरण है।

इसलिथे यह कहता है, कि परमेश्वर उन में दोष निकालता है, और कहता है, यहोवा की यही वाणी है, ऐसे दिन अवश्य आते हैं, जब मैं इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने के साथ नई वाचा बान्धूंगा। उस वाचा के समान नहीं, जो मैं ने उस दिन उनके पुरखाओं से बान्धी थी, जब मैं ने उनका हाथ पकड़ कर उन्हें मिस्र देश से निकाल लिया, क्योंकि वे मेरी वाचा पर कायम न रहे, और इस कारण मुझे उनकी कुछ चिन्ता न रही, यहोवा की यही वाणी है। यह वह वाचा है जो मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बान्धूंगा, यहोवा का यही वचन है।

मैं अपने नियम उनके मन में डालूंगा, और उन्हें उनके हृदय पर लिखूंगा। मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा; वे मेरे लोग होंगे। और वे एक दूसरे को न सिखाएं, और न एक दूसरे से कहें, प्रभु को जानो, क्योंकि छोटे से लेकर बड़े तक सब मुझे जान लेंगे, क्योंकि मैं उनके अधर्म के कामों पर दया करूंगा।

मैं उनके पापों को फिर स्मरण न करूंगा। पापों की क्षमा का विषय. और फिर अंतिम पद, मुझे लगता है कि मैंने 17 कहा था, लेकिन पद 13 में मेरा मतलब था, एक नई वाचा की बात करते समय, उसने पहले को अप्रचलित कर दिया है और जो अप्रचलित है और पुराना हो रहा है वह जल्द ही गायब हो जाएगा।

लेकिन लेखक यह प्रदर्शित करने के लिए आगे बढ़ता है कि यिर्मयाह द्वारा इस नई वाचा की भविष्यवाणी की गई थी, जिस तथ्य के बारे में भगवान ने बात की थी और एक नई वाचा का वादा किया था, वह बताता है कि पुरानी वाचा को बदल दिया जाएगा और अब लागू नहीं होगा। अब लेखक इस खंड के शेष भाग में स्पष्ट है कि यीशु मसीह की मृत्यु और यीशु मसीह एक नए पुजारी के रूप में एक स्वर्गीय मंदिर में सेवा करते हुए स्पष्ट रूप से इस वाचा के उद्घाटन का संकेत देते हैं। इसलिए, विशेष रूप से इब्रानियों ने न केवल यह मान लिया है, बल्कि यीशु द्वारा यिर्मयाह की

नई वाचा का उद्घाटन करने के विषय को स्पष्ट रूप से विकसित किया है जो अब लोगों के लिए मुक्ति लाता है।

फिर, मैं यह भी सुझाव दूंगा कि जहां भी सामान्य पत्रों में पवित्र आत्मा का उल्लेख किया गया है, इब्रानियों से प्रकाशितवाक्य की पुस्तक तक, जहां भी पवित्र आत्मा का उल्लेख किया गया है, एक बार फिर पॉल की तरह, यह नई वाचा को मानता है। यह जेकेल 37 से पवित्र आत्मा नई वाचा का उपहार है या परमेश्वर की वाचा की स्थापना से जुड़ा है। इसलिए, चर्च, भगवान के लोगों को इस विषय की पूर्ति में भगवान के सच्चे लोगों के रूप में देखा जाता है।

परमेश्वर एक नई वाचा में प्रवेश करता है। वे नई वाचा की स्थापना के आधार पर स्थापित किए गए हैं। नई वाचा की स्थापना के द्वारा वे परमेश्वर के लोग बन गए हैं।

वह उनका भगवान है। वे उसके लोग होंगे। अंत में या अगला, राजत्व या डेविडिक शासन का विषय।

फिर, इब्रानियों अध्याय 1 की आयत 5 से शुरू करते हुए, परमेश्वर ने स्वर्गदूतों में से किस से कभी कहा, तू मेरा पुत्र है, आज मैं ने तुझे उत्पन्न किया है। या फिर, मैं उसका पिता बनूंगा और वह मेरा बेटा होगा। वह भाषा भजन अध्याय 2, एक शाही या डेविडिक भजन, और 2 सैमुअल 7, डेविडिक वाचा सूत्र से निकलती है।

ताकि अब यीशु मसीह स्पष्ट रूप से दाऊद के पुत्र के रूप में तैयार हो। इसका अनुमान संभवतः अध्याय 1 के पहले कुछ छंदों में, विशेष रूप से श्लोक 3 में पहले से ही लगाया गया है। वह, ईश्वर के पुत्र, यीशु का संदर्भ देते हुए, ईश्वर की महिमा का प्रतिबिंब है, ईश्वर के अस्तित्व की सटीक छाप है, शायद छवि का सुझाव दे रहा है देव भाषा का। और वह अपने सामर्थी वचन से सब वस्तुओं को सम्भालता है।

जब उसने पापों के लिए शुद्धिकरण किया, तो वह ऊँचे पर परमेश्वर या ऊँचे पर महिमा के दाहिने हाथ पर बैठ गया, भजन 110 को याद करते हुए। तो स्पष्ट रूप से, यीशु को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा जाता है जो एक उप-शासनकर्ता, एक डेविडिक राजा के वादे को पूरा करता है, जो परमेश्वर के लोगों पर शासन करेगा, लेकिन जो भजन 2, भजन 110 की पूर्ति में संपूर्ण सृष्टि में परमेश्वर के शासन का विस्तार करेगा, और अंततः उस राजा का इरादा जो दाऊद के सिंहासन पर बैठेगा। तो स्पष्ट रूप से इब्रानियों ने अध्याय 1 में पहले से ही न केवल सृष्टि, बल्कि डेविडिक राजत्व दोनों की भाषा को एक साथ खींचा है।

आप इसे बाद में इब्रानियों के अध्याय 2 और श्लोक 5 से 8 में पाते हैं, जिसमें फिर से भजन अध्याय 8 से काफी लंबा उद्धरण है, एक भजन जिसे हमने इफिसियों के अध्याय 1 में देखा था। तो, इब्रानियों के लेखक कहते हैं, अब भगवान आने वाले संसार को, जिसके विषय में हम स्वर्गदूतों से बात कर रहे हैं, अधीन नहीं किया, परन्तु किसी ने कहीं गवाही दी, अर्थात् भजन 8 के लेखक ने, कि मनुष्य क्या हैं कि तू उनका ध्यान रखता है, या मनुष्य क्या हैं कि तू उनकी परवाह करता है? तू ने उन्हें स्वर्गदूतों से कुछ ही कमतर बनाया है। तू ने उनको महिमा और आदर का मुकुट पहनाया, और सब कुछ उनके पांवों के नीचे कर दिया। और फिर लेखक इस गीत पर अपनी टिप्पणी में आगे कहते हैं, अब सभी चीजों को उनके अधीन करने में, भगवान ने उनके नियंत्रण से बाहर कुछ भी नहीं छोड़ा।

वैसे भी, हम अभी तक हर चीज़ को उनके अधीन नहीं देखते हैं। परन्तु हम यीशु को देखते हैं, जिसे कुछ समय के लिए स्वर्गदूतों से भी नीचे बनाया गया था, अब पीड़ा और मृत्यु के कारण महिमा और सम्मान का ताज पहनाया गया, ताकि भगवान की कृपा से वह सभी के लिए मृत्यु का स्वाद चख सके। तो यहां पर क्या हो रहा है? मूल रूप से, लेखक कह रहा है, यीशु मसीह ने इस भजन 8 का उद्घाटन किया है, जो स्पष्ट रूप से, जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं, भजन 8 सृष्टि पर वापस जाता है।

यह मूल सृष्टि के बारे में एक भजन है, जहाँ ईश्वर सृष्टि पर शासन करने के लिए अपनी छवि में मानवता का निर्माण करता है। वह अब यीशु मसीह में पूरा होना शुरू हो गया है। हम पहले से ही

यीशु को देखते हैं, जो अब पहले से ही हमारे उद्धार को पूरा करने और सभी चीजों को अपने पैरों के नीचे अधीन करने की प्रक्रिया में है, उस समय की प्रत्याशा में जब यह भजन, सृजन के लिए भगवान के इरादे को पूरा करने में, अपनी अंतिम अभिव्यक्ति पाएगा।

लेकिन ध्यान दें, यीशु ही वह है जो हर किसी को मौत का स्वाद चखता है। बाद में, उन्हें पद 10 लाने वाले के रूप में वर्णित किया गया है, यह उचित है कि भगवान, जिनके लिए और जिनके माध्यम से सभी चीजें मौजूद हैं, कई बेटों को महिमा में लाने के लिए, उनके उद्धार के अग्रदूत को पीड़ा के माध्यम से परिपूर्ण बनाना चाहिए। तो, यीशु, जो भजन 8 को पूरा करता है, वह साधन है जिसके द्वारा हम संपूर्ण सृष्टि पर शासन करने वाले मानवता के भजन 8 में भगवान के इरादे को पूरा करने की अपनी नियति को प्राप्त करते हैं।

तो, स्पष्ट रूप से, हिब्रू का लेखक यीशु मसीह को एक उप-शासनकर्ता, एक राजा के डेविडिक वादों की पूर्ति के रूप में देखता है, जो शासन करेगा, लेकिन अंततः, इसे भजन 8 जैसे पाठ के साथ वापस सृष्टि से जोड़ रहा है। हमारा इरादा, हमारा भाग्य जिसे उत्पत्ति 1 और 2 में आदम द्वारा पूरा करने का इरादा था, अब यीशु मसीह के माध्यम से पूरा हो गया है, जो हमारे विश्वास और हमारे उद्धार के अग्रणी और सिद्धकर्ता हैं। आपको बस एक और पाठ का प्रदर्शन देने के लिए, जिसे हम पहले ही पढ़ चुके हैं जो राजत्व के संदर्भ में स्पष्ट रूप से बात करता है जो अब विशेष रूप से लोगों पर लागू होता है, हम पहले ही 1 पतरस 2 और छंद 9 और 10 देख चुके हैं, लेकिन दोहराना होगा 1 पतरस अध्याय 2 का श्लोक 9, तुम एक चुनी हुई जाति हो, एक राजसी याजकवर्ग हो। राज्य या राजघराने, एक पवित्र राष्ट्र की भाषा पर ध्यान दें।

फिर, इज़राइल का इरादा अपने लोगों और अंततः, सृजन के लिए भगवान के इरादे को पूरा करने के लिए एक राज्य और एक पुरोहिती दोनों बनना था। अब, यह बात परमेश्वर के लोगों पर लागू होती है। फिर, ऐसे अन्य पाठ भी हैं जिनकी ओर हम इशारा कर सकते हैं जो यीशु को, शायद, डेविड से किए गए वादों की पूर्ति से जोड़ते हैं या जो शासन के विषय से जुड़ते हैं, लेकिन जब हम प्रकाशितवाक्य अध्यायों पर पहुंचेंगे तो हम इसे और अधिक स्पष्ट रूप से देखेंगे। 1 और 2. तो, भगवान के लोग, नई वाचा जहां भगवान अपने लोगों के साथ एक वाचा संबंध स्थापित करते हैं,

राजत्व का विषय डेविडिक राजा में व्यक्त किया गया, उप-शासन मसीह में पूरा हुआ, लेकिन पूरी पृथ्वी पर शासन करने के लिए भी फैल गया उत्पत्ति 1 और 2 की पूर्ति। मंदिर की भाषा या मंदिर की कल्पना के बारे में क्या? 1 पतरस, फिर से, 1 पतरस अध्याय 2, छंद 4, 5, और विशेष रूप से छंद 4, 5, और 6 भी, हम उसे पढ़ेंगे, छंद 4, 5, और 6। और छंद 9 भी, जहां वे हैं शाही पुरोहिती कहा जाता है, लोगों को शाही पुरोहिती कहा जाता है।

लेकिन श्लोक 4 से 6 में 1 पतरस के अध्याय 2 पर वापस जाएँ, और जो मैं चाहता हूँ कि आप ध्यान दें वह यह है कि कैसे, पॉल और अन्य नए नियम के लेखकों की तरह, पतरस लोगों पर लागू करने के लिए मंदिर की भाषा का उपयोग करता है ताकि पुनर्स्थापित मंदिर पाया जा सके। लोग स्वयं, कोई अलग संरचना नहीं। तो, 1 पतरस 2, 4 से 6, आप उसके पास आते हैं, यीशु मसीह के लिए एक जीवित पत्थर, हालाँकि नश्वर लोगों द्वारा अस्वीकार कर दिया गया है, फिर भी भगवान की दृष्टि में चुने गए और अनमोल हैं, और जीवित पत्थरों की तरह, आप स्वयं एक आध्यात्मिक घर में बनाए जा रहे हैं यीशु मसीह के माध्यम से ईश्वर को स्वीकार्य आध्यात्मिक बलिदान देने के लिए एक पवित्र पुरोहिती बनें। क्योंकि पवित्रशास्त्र में लिखा है, देखो, मैं सियोन में कोने का एक पत्थर, चुना हुआ और बहुमूल्य रखता हूँ, और जो कोई उस पर विश्वास करेगा, वह लज्जित न होगा।

इसलिए, ऐसा प्रतीत होता है कि पीटर ने चर्च के उस विचार को एक मंदिर, एक आध्यात्मिक मंदिर के रूप में अपनाया है, जिसके बलिदान पुराने नियम के पशु बलिदान नहीं हैं, बल्कि जिनके बलिदान अब स्तुति, पूजा और आज्ञाकारिता के बलिदान हैं जो यीशु को चढ़ाए जाते हैं। मसीह. इब्रानियों अध्याय 10, फिर से इब्रानियों की किताब, इब्रानियों अध्याय 10, और छंद 19 से 22 पर वापस जाएं। इसलिए, मेरे दोस्तों, चूँकि हमें यीशु के खून से, नए और जीवित तरीके से पवित्रस्थान में प्रवेश करने का भरोसा है उसने अपने शरीर के बीच का परदा हमारे लिये खोल दिया, और चूँकि हमारे पास परमेश्वर के घर का एक महान महायाजक है, आइए हम सच्चे हृदय से पूरे विश्वास के साथ उसके पास जाएँ, और अपने हृदयों को दुष्ट विवेक से शुद्ध कर लें। और हमारे शरीर शुद्ध जल से धोए गए।

और ऐसी बहुत सी भाषा है जिसके बारे में हम बात कर सकते हैं कि इसका क्या मतलब हो सकता है, लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप इस तथ्य को देखें कि यह भाषा, फिर से, मंदिर की कल्पना को दर्शाती है। ईश्वर के करीब आने और उसकी उपस्थिति के करीब पहुंचने की यह भाषा, पुरोहिताई की भाषा, शुद्ध होने की भाषा और स्वच्छ छिड़के जाने और शुद्ध पानी से धोए जाने की भाषा, यह सब पौरोहित्य और मंदिर की पुराने नियम की भाषा के साथ प्रतिध्वनित होती है। इसलिए एक बार फिर, लेखक सुझाव दे रहा है कि यीशु मसीह के माध्यम से एक नया मंदिर स्थापित किया गया है।

हमें ईश्वर की उपस्थिति तक तत्काल पहुंच प्राप्त है। और वास्तव में, फिर से, चर्च ही वह मंदिर है जहां भगवान की उपस्थिति रहती है। ईश्वर के लोगों के लिए, ईश्वर ने सृष्टि से ही लोगों को स्थापित करने, एक अनुबंधित रिश्ते में प्रवेश करने के अपने इरादे को पूरा करने के लिए एक लोगों की स्थापना की है।

नई वाचा स्थापित हो गई है। भगवान उनका भगवान होगा। वे उसके लोग होंगे।

डेविडिक राजा की स्थापना पुराने नियम के वादों की पूर्ति में, भजनों की पूर्ति में, डेविडिक राजा द्वारा अपने लोगों पर स्वर्ग से शासन करने के साथ की गई है, बल्कि वह पूरी सृष्टि पर भी शासन करता है। परमेश्वर के लोग स्वयं एक राजा हैं और इस शासन में भाग लेते हैं। मंदिर की स्थापना हो चुकी है।

परमेश्वर का निवास अब उसके लोगों के बीच है। उनका तम्बू मंदिर आवास अब उनके लोगों के पास है जो एक अलग भौतिक संरचना के विपरीत सच्चा मंदिर हैं। अंतिम विषय भूमि एवं सृजन है।

फिर से, लोगों को दी गई भूमि का विषय, उत्पत्ति 1 और 2 में आदम और हव्वा को दिया गया, ईश्वर की उपस्थिति में आशीर्वाद के स्थान के रूप में इज़राइल को दिया गया, लेकिन फिर अंततः एक नई रचना की बहाली का वादा किया गया, वह सारी भाषा फसलें भी उगती हैं। और फिर, मैं

केवल कुछ मुट्टी भर पाठों को छूना चाहता हूँ, जो फिर से 1 पतरस 1 से शुरू होता है। पद 3 और 4 में 1 पतरस 1। और जैसा कि मैंने इसे पढ़ा है, मैं चाहता हूँ कि आप विरासत भूमि के प्रकार की कल्पना पर फिर से ध्यान दें। 1 पतरस 1 का श्लोक 3, हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता को धन्यवाद, उन्होंने अपनी महान दया से, हमें पुनरुत्थान के माध्यम से एक जीवित आशा में एक नया जन्म दिया है, जो सृजन भाषा, या नई सृजन भाषा है। यीशु मसीह, मृतकों में से नई सृष्टि का उद्घाटन और एक ऐसी विरासत का उद्घाटन जो अविनाशी, निष्कलंक और अमर है, जो आपके लिए स्वर्ग में रखी गई है।

तो ध्यान दें, फिर से, न केवल नए जन्म और पुनरुत्थान की नई रचना भाषा, बल्कि विरासत पर भी, ताकि अब विरासत, स्वर्गीय विरासत जिसका हम आनंद ले रहे हैं, उसे विरासत के वादे की अंतिम पूर्ति के रूप में देखा जाए, मुझे लगता है भूमि। भूमि ने जिसे दर्शाया और इंगित किया वह अंततः अब मुक्ति और नई सृष्टि का आशीर्वाद था जो यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पहले ही पूरा हो चुका है और उद्घाटन किया गया है। वह 1 पतरस 1 पद 3 और पद 4 था। एक पाठ जिसे हमने अभी तक नहीं देखा है, लेकिन जॉन अध्याय 1, सृजन भूमि विषय या अधिक नए निर्माण विषय को एक अलग कोण से देखने के लिए, 1 जॉन अध्याय 2 और पद 17.

यदि मैं श्लोक 15 और 16 का समर्थन कर सकता हूँ, "... संसार या संसार की चीज़ों से प्रेम मत करो। पिता का प्रेम उन लोगों में नहीं है जो संसार से प्रेम करते हैं। संसार में जो कुछ भी है, उसके लिए शरीर की इच्छा, आँखों की इच्छा, धन का घमंड, जिन्हें कुछ लोगों ने अक्सर उत्पत्ति अध्याय 3 में मूल प्रलोभन से जोड़ा है, वे पिता से नहीं, बल्कि संसार से आते हैं।

और संसार और उसकी अभिलाषाएँ मिटती जा रही हैं, परन्तु जो परमेश्वर की इच्छा पर चलते हैं वे सर्वदा जीवित रहेंगे।" दूसरे शब्दों में, यहाँ हम विनाश का विषय देखते हैं। वर्तमान संसार एक नई सृष्टि की प्रत्याशा में पहले से ही नष्ट हो रहा है। और फिर, जॉन यहाँ स्पष्ट रूप से नई सृजन भाषा का उपयोग नहीं करता है, लेकिन वह निश्चित रूप से वर्तमान पृथ्वी के हास की धारणा का उपयोग करता है।

वर्तमान दुनिया एक नई रचना के उद्घाटन और पूर्णता की प्रत्याशा में पहले से ही खत्म हो रही है। जेम्स अध्याय 1 और पद 18, फिर से, बस एक और पाठ लाने के लिए जिसे हमने अभी तक नहीं देखा है। अध्याय 1 और पद 18, "...अपने स्वयं के उद्देश्य की पूर्ति में, उसने हमें सत्य के शब्द से जन्म दिया, ताकि हम उसकी रचना के पहले फल बन सकें।" उस एक खंड में संयुक्त रूप से नए जन्म, फल और सृजन की भाषा पर ध्यान दें।

तो फिर, मुझे लगता है कि जेम्स मान रहा है कि नई रचना का उद्घाटन हो चुका है। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं का पाठ जो एक नई रचना, एक नए जन्म, फलदायीता का उल्लेख करता है जो अब उभरेगा, जेम्स के कथन में पाया जाता है कि भगवान ने हमें एक नया जन्म दिया है, ताकि हम उसकी रचना का पहला फल बन सकें। . जेम्स अध्याय 1 और जेम्स अध्याय 2 के अनुसार, नई रचना का उद्घाटन पहले ही उन लोगों द्वारा किया जा चुका है जो विश्वास और आज्ञाकारिता में शब्द का जवाब देते हैं। लेकिन शायद वह पाठ जो किसी भी अन्य पाठ से अधिक कहता है, कम से कम सामान्य पत्रों में, के बारे में अध्याय 3 और 4 में भूमि और सृष्टि का विषय इब्रानियों में है, इब्रानियों में। और मैं इस पूरे खंड को पढ़ना नहीं चाहता, लेकिन यह उन चेतावनियों में से एक के संदर्भ में है जो इब्रानियों के साहित्यिक परिदृश्य को दर्शाते हैं।

और इस खंड में, लेखक अपने पाठकों, शायद यहूदी ईसाइयों, को इस विश्राम को न चूकने की चेतावनी देता है। यानि कि उनके पास आराम उपलब्ध है। और लेखक स्पष्ट रूप से उस विश्राम की पहचान करता है, जैसा कि हम कह सकते हैं, यीशु मसीह में विश्राम, मसीह यीशु में मुक्ति के रूप में।

इसलिए, वह अपने पाठकों को चेतावनी दे रहे हैं कि इसे न चूकें और उससे दूर न जाएं। लेकिन जो दिलचस्प है वह यह है कि वह ऐसा कैसे करता है, इब्रानियों के लेखक की तुलना करके, चाहे वह कोई भी हो, अपने पाठकों की तुलना पुराने नियम के परमेश्वर के लोगों से करता है। दूसरे शब्दों में, वह अपने पाठकों की तुलना उनके पूर्वजों से करता है जो वादा किए गए देश तक जंगल में भटकते रहे।

फिर भी, यदि आपको यह पुराने नियम की कहानी याद है, जब परमेश्वर के लोगों ने उन्हें मिस्र और निर्गमन से बचाया, और उन्हें जंगल के माध्यम से वादा किए गए देश तक ले गए, तो उन्होंने अंदर जाने से इनकार कर दिया। उन्होंने परमेश्वर के वादे और उनके आदेश का पालन करने से इनकार कर दिया। अंदर जाओ। और अवज्ञा के कारण उन्हें ऐसा करने की अनुमति नहीं दी गई।

बाद तक, यहोशू उन्हें अंदर ले जाएगा। लेकिन ध्यान दें कि इब्रानियों अध्याय 3 और 4 में, लेखक अपने पाठकों से कहता है, इस मुक्ति विश्राम को न चूकें जो अब यीशु मसीह द्वारा प्रदान किया गया है। मसीह में आने वाले इस विश्राम को न चूकें।

मैं समझता हूँ कि आराम से उसका यही मतलब है। लेकिन ध्यान दें कि वह इसे पुराने नियम से कैसे जोड़ता है। अध्याय 4 और श्लोक 2 में, वह कहता है, वास्तव में, अच्छी खबर हमारे पास आई, पहली शताब्दी में इब्रानियों के पाठकों के लेखक, उनके लिए, भगवान के पुराने नियम के लोग जो जंगल में भटकते थे।

परन्तु जो सन्देश उन्होंने सुना, उस से उन को कुछ लाभ न हुआ, क्योंकि सुननेवालोंके साथ विश्वास करके वे एक न हुए। क्योंकि हम जिन्होंने विश्वास किया है, उस विश्राम में प्रवेश करें, जैसा परमेश्वर ने कहा है। इतना स्पष्ट रूप से, उसके पाठक इस विश्राम में प्रवेश कर सकते हैं, जिसे यदि आप अध्याय 3 और 4 पढ़ते हैं, तो वह स्पष्ट रूप से मसीह में मोक्ष के साथ, मसीह में आराम करने और अपने उद्धार के लिए मसीह पर भरोसा करने के साथ जोड़ता है।

श्लोक 10, फिर विश्राम का विचार, क्योंकि जो परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करते हैं, वे भी अपने परिश्रम से रुक जाते हैं। इसलिए आराम करो और मसीह पर भरोसा रखो, न कि अपने कामों और अपने परिश्रम पर। श्लोक 12 और 13, वास्तव में, परमेश्वर का वचन जीवित और सक्रिय है, किसी भी दोधारी तलवार से भी अधिक तेज है, जब तक वह आत्मा को आत्मा से अलग नहीं कर देता, तीर से जोड़ नहीं देता।

यह दिल के विचारों और इरादों को परखने में सक्षम है। और कोई प्राणी उस से छिपा नहीं, वरन सब नंगे खड़े हैं, और जिस से हमें लेखा लेना है उसकी आंखों के साम्हने नंगे खड़े हैं। तो यह परमेश्वर का वचन है जो इस विश्राम में प्रवेश करने वाले के अनुसार न्याय करता है।

तो, परमेश्वर के लोगों के लिए स्वयं यीशु मसीह द्वारा निर्धारित एक वादा किया हुआ आराम उपलब्ध है। कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता है कि क्या ईश्वर के शब्द को जीवित, सक्रिय, किसी भी दोधारी तलवार से भी तेज कहने का मतलब स्वयं मसीह को संदर्भित करना है। हालाँकि फिर भी, यह सुसमाचार या ईश्वर के वचन को संदर्भित कर सकता है जो घोषित किया गया है।

लेकिन स्पष्ट रूप से इसका मतलब यह निर्णय करना है कि उस विश्राम में कौन प्रवेश करता है। और चेतावनी, इस विश्राम से वंचित न रहें, इस विश्राम को न चूकें जिसका उद्घाटन मसीह में हुआ है, इस विश्राम और मसीह पर भरोसा करना। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप दो बातें नोट करें.

ध्यान दें कि यह कैसे जुड़ा हुआ है, सबसे पहले, इज़राइल को दी गई वादा की गई भूमि से। पद 8, क्योंकि यदि यहोशू ने उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश में ले जाते समय विश्राम दिया होता, तो परमेश्वर किसी और दिन के बारे में बाद में बात नहीं करते। अर्थात्, भजन 95 है जिसके लेखक के उद्धरण से यह अनुमान लगता है कि अभी भी विश्राम उपलब्ध है।

और अब लेखक कहता है कि यदि यहोशू ने लोगों को अंतिम विश्राम दिया था, भले ही वह विश्राम था, यदि यही सब कुछ था, तो भजन 95 में भगवान अभी भी बहुत बाद में विश्राम का वादा क्यों कर रहे थे? और अब इब्रानियों का लेखक कह रहा है कि विश्राम अब यीशु मसीह के द्वारा उपलब्ध है। तो फिर, वादा किए गए देश में लोगों ने जो आराम का आनंद लिया था, जो उन्हें इब्राहीम से किए गए वादे को पूरा करने के लिए दिया गया था, अब अंततः यीशु मसीह में आराम करने और इब्रानियों 4 और 5, 3 और 4 में उनके द्वारा प्रदान किए गए उद्धार में पूरा हो गया है। फिर से यही कारण है कि लोगों से कहा जाता है, इस विश्राम को न चूकें जो अभी भी यीशु मसीह के व्यक्तित्व के माध्यम से आपके लिए उपलब्ध है। तो यह वापस वादा की गई भूमि से जुड़ा हुआ है।

मैं यह मानता हूँ कि मसीह जो विश्राम प्रदान करता है वह अंतिम पूर्ति और विश्राम का उद्घाटन है जिसे केवल आशीर्वाद और भगवान की उपस्थिति की भूमि में दर्शाया और प्रत्याशित किया गया था जो इज़राइल को दिया गया था। लेकिन ध्यान दें कि यह विश्राम किस प्रकार सृष्टि से भी जुड़ा हुआ है। उत्पत्ति 3 और 4. क्योंकि हम ने, जिन्होंने विश्वास किया है, उस विश्राम में प्रवेश किया है, जैसा परमेश्वर ने कहा था, जैसा कि मैं ने क्रोध में आकर शपथ खाई थी कि वे मेरे विश्राम में प्रवेश न करेंगे, भजन 95 का हवाला देते हुए।

हालाँकि उसके कार्य दुनिया की नींव पर समाप्त हो गए थे, क्योंकि एक जगह यह सातवें दिन के बाद के बारे में बताता है, और भगवान ने अपने सभी कार्यों से सातवें दिन विश्राम किया था। तो, ध्यान दें कि लेखक इसे सृजन कथा से कैसे जोड़ता है। तो कम से कम, यद्यपि यहां अन्य चीजें चल रही हैं, कम से कम, लेखक बाकी को देखता है जिसे मसीह में अनुभव किया जा सकता है, वह मुक्ति जिसमें कोई मसीह में भाग लेता है, जो बाकी इब्रानियों में वर्णित है, एक है वादा की गई भूमि की पूर्ति, बाकी लोगों को इसराइल को दिए गए वादे की भूमि में आनंद लेना था, लेकिन अंततः वह बाकी जो उत्पत्ति अध्याय 3 और 4 में मूल रचना से जुड़ा था। अब वह कहानी अपने चरम पर पहुंच गई है विश्राम जिसका आनंद अब यीशु मसीह के रूप में लिया जा रहा है।

तो फिर, अंततः भूमि का वादा, मूल रचना, इज़राइल को भूमि का वादा मसीह में आराम करने और अपने उद्धार के लिए उस पर भरोसा करने में अपनी पूर्ति तक पहुंचता है। इसलिए रहस्योद्घाटन को देखने से पहले सामान्य पत्रों के निष्कर्ष में, सामान्य पत्र भी कभी-कभी स्पष्ट रूप से सामने आते हैं, लेकिन अन्य समय में सतह के ठीक नीचे इस कहानी और भूमि और निर्माण के इन पांच मुख्य विषयों, मंदिर की धारणा निहित होती है। , परमेश्वर के लोगों का, नई वाचा का, और राजत्व का, दाऊद का राजत्व, और शासकत्व का। अब पूरे नए नियम में, पॉल के पत्र, यहाँ तक कि गॉस्पेल, पॉल के पत्र और सामान्य पत्र जिनके बारे में हम बहुत संक्षिप्त और जल्दबाजी में गए थे, हम देखते हैं कि जोर मुख्य रूप से उसी पर है, जिस पर हमने ध्यान केंद्रित किया है। पहले से ही पहलू, कहानी का उद्घाटन पहलू, लेकिन पॉल के पत्रों और शेष नए नियम

में पहले से ही या अभी तक नहीं आयाम, पूर्ण आयाम जो अभी आना बाकी है, के बहुत सारे संकेत बिखरे हुए हैं।

हमने देखा कि, उदाहरण के लिए, इफिसियों 1.10 में पॉल के संदर्भ के साथ, भगवान की योजना यह है कि एक दिन सभी चीजें मसीह में संक्षेपित हो जाएंगी और उचित स्थान मिल जाएगा, स्वर्ग और पृथ्वी में सभी चीजों को संबंध में सही स्थान मिल जाएगा मसीह. लेकिन यह प्रकाशितवाक्य 21 और 22 है जिसमें इस कहानी की समाप्ति का सबसे विस्तृत विवरण है। यहाँ समापन है.

प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 और 22 में कहानी का निष्कर्ष इस प्रकार है। और जो मैं इस खंड में फिर से प्रदर्शित करना चाहता हूँ वह यह है कि वस्तुतः सभी पांच विषय, साथ ही कुछ अन्य चीजें, लेकिन सभी पांच विषय जिन पर हमने बात की है प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में स्पष्ट रूप से अपने चरमोत्कर्ष और समापन को खोजें। ताकि कहानी के सभी धागे जो अन्य खंडों में उभरते रहते हैं और आपस में जुड़ते रहते हैं, वे सभी प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 और 22 में अपनी पूरी महिमा और अपनी संपूर्णता में एक साथ आते हैं। सर्वनाशकारी दृष्टि जो जॉन के पास है।

और जैसा कि हम इस बारे में बात करते हैं, यह स्पष्ट है कि जॉन पुराने नियम, भविष्यसूचक पाठ, साथ ही सृजन तक वापस जाता है, लेकिन उन्हें नए नियम के प्रकाश में भी देखता है और वे मसीह में कैसे पूरे हुए हैं। लेकिन अब वे अपनी अंतिम पूर्ति पर पहुंच गए हैं। इसलिए, उदाहरण के लिए, हम परमेश्वर के लोगों के विषय से शुरुआत करेंगे।

प्रकाशितवाक्य का यह अंतिम दर्शन, कुछ मायनों में, ईश्वर के पूर्ण लोगों पर केंद्रित है, जो उत्पत्ति 1 और 2 में लोगों को बनाने के ईश्वर के इरादे से शुरू होता है, जो अब ईश्वर की पसंद इज़राइल को उसके लोगों, उसके राष्ट्र के रूप में पूरा किया गया है। और हमने देखा कि नया नियम अब मसीह और उसके चर्च में पूरा हो गया है, अब यह भगवान के लोगों में अपनी अंतिम अभिव्यक्ति पाता है, प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में भगवान के लोगों का दर्शन। इसलिए, उदाहरण के लिए, मैं बस बताना चाहता हूँ परमेश्वर के लोगों के विषय की कुछ विशेषताएं जो पिछले पुराने नियम के ग्रंथों से ली गई हैं।

प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 और 22 में, हम ईश्वर के परिपूर्ण लोगों को दुल्हन के रूप में संदर्भित पाते हैं, जो, फिर से, पुराने नियम की भाषा है। पुराने नियम में भगवान के लोगों को अक्सर भगवान की पत्नी के रूप में, भगवान की दुल्हन के रूप में, एक महिला के रूप में संदर्भित किया जाता था जिससे भगवान ने शादी की थी और उसके साथ एक अनुबंधित संबंध में प्रवेश किया था, जो अनुबंध के मुद्दे को उठाता है। इसे नये नियम में उठाया गया है।

उदाहरण के लिए, पॉल के पत्र जहां चर्च यीशु मसीह की दुल्हन है। परन्तु अब प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 और श्लोक 2 में, और मैंने पवित्र नगर, नये यरूशलेम को, अपने पति के लिए सजी हुई दुल्हन के रूप में तैयार होकर, परमेश्वर के पास से स्वर्ग से बाहर आते देखा। और पद 9, तब उन सात स्वर्गदूतों में से जिनके पास सात पिछली विपत्तियों से भरे हुए सात बैल थे, एक ने आकर मुझ से कहा, आ, मैं तुझे दुल्हन अर्थात् मेमने की पत्नी दिखाऊंगा।

तो स्पष्ट रूप से विवाह की कल्पना, अपने लोगों के साथ भगवान के रिश्ते को दर्शाने के लिए पुराने नियम की विवाह संबंधी कल्पना अब अंततः उस विवाह में पूरी हो जाती है जो संपन्न हो जाता है और अंततः उत्पत्ति अध्याय 21 और 22 में होता है। दो अन्य विशेषताओं पर ध्यान दें जो इस तरह की होती हैं अपने लोगों के साथ परमेश्वर के व्यवहार के उद्धारकारी इतिहास को अब एक ही स्थान पर एक साथ लाएँ, यह शहर है, फिर से, जॉन एक दृष्टि देख रहा है ताकि मैं यह मानूँ कि हमें इसे गंभीरता से लेना है, जो वह देखता है उसके एक प्रतीकात्मक चित्रण के रूप में। लेकिन फिर भी, प्रतीक और चित्र पुराने नियम से ही आते हैं।

तो, जॉन एक शहर देखता है जिसके बारे में मैं तर्क दूंगा कि यह, जो जॉन देखता है वह एक भौतिक शहर नहीं है। यह जो संदर्भित करता है वह मुख्य रूप से एक भौतिक शहर नहीं है, बल्कि बहुत कुछ जैसा कि हमने पहले नए नियम के पाठ में देखा था जहां इमारत और मंदिर की कल्पना लोगों को संदर्भित करती है, यह शहर जिसे जॉन मुख्य रूप से देखता है वह स्वयं लोगों को संदर्भित करता है। ईश्वर जो देखता है वह स्वयं पूर्ण सिद्ध लोग हैं।

इसलिए श्लोक 12 में, इस शहर में 12 द्वारों वाली बड़ी ऊंची दीवारें हैं, और द्वारों पर 12 स्वर्गदूत हैं, और द्वारों पर इस्राएल के 12 जनजातियों के नाम खुदे हुए हैं। लेकिन शहर की भी नींव होती है। और अध्याय 21 और श्लोक 14 में, वह कहता है, और शहर की दीवार की 12 नींव हैं और उन पर, मेम्ने के 12 प्रेरितों के 12 नाम अंकित हैं।

इसलिए, जॉन ईश्वर के पूर्ण सिद्ध लोगों को देखता है जिसमें पुराने नियम के इज़राइल दोनों शामिल हैं, लेकिन वह ईश्वर के नए लोगों को स्थान की प्रधानता देता प्रतीत होता है, जो प्रेरितों की नींव पर बनाया गया है। लेकिन स्पष्ट रूप से वह भगवान के पुराने नियम के लोगों और भगवान के नए नियम के लोगों के बीच निरंतरता को देखता है जो अब जॉन के भगवान के सिद्ध लोगों के दर्शन में एक साथ आते हैं। उस विषय के बारे में हम और भी बातें कह सकते हैं।

दिलचस्प बात यह है कि अंततः, परमेश्वर की यह प्रजा सभी राष्ट्रों के लिए एक प्रकाश है। तो, श्लोक 23 और 24 में, शहर को चमकने के लिए सूर्य या चंद्रमा की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि भगवान की महिमा इसकी रोशनी है। राष्ट्र प्रकाश से चलेंगे।

पृथ्वी के राजा अपना वैभव उस में लाएंगे। तो अब पूरी सृष्टि को ईश्वर की महिमा से भरने के लिए मानवता के लिए ईश्वर के इरादे की पूर्ति में, जो अब सभी लोगों के साथ नए यरूशलेम की रोशनी के जवाब में आने के साथ अपने चरम पर पहुंच गया है। वाचा का विषय, हमने कहा कि परमेश्वर के लोगों के विषय के केंद्र में या उससे संबंधित परमेश्वर की वाचा का विषय है।

प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 और पद 3 में, यूहन्ना सिंहासन से एक आवाज सुनता है और कहता है, देखो, परमेश्वर का निवास उसके लोगों या मानवता के बीच में है। वह उनके साथ निवास करेगा. वे उसके लोग होंगे.

और परमेश्वर आप ही उनका परमेश्वर ठहरेगा, और उनके संग परमेश्वर रहेगा। यह खंड प्रकाशितवाक्य में हमें पुराने नियम के पाठ के वास्तविक उद्घरण के सबसे करीब मिलता है। बिना सूत्र के, जो लिखा था उसे पूरा करने के लिए ऐसा हुआ।

यहां का शब्दांकन यहजेकेल अध्याय 37 और पद 27 और अनुबंध सूत्र के बहुत करीब है जहां आप मेरे होंगे... नई वाचा सूत्र, आप मेरे लोग होंगे। वे मेरे भगवान होंगे. मैं तुम्हारा भगवान बनूंगा.

हमने देखा कि नई वाचा पहले से ही मसीह और उसके लोगों में पूरी हो चुकी थी, लेकिन अब नई वाचा स्वयं ईश्वर के साथ वाचा के संबंध में ईश्वर के पूर्ण, सिद्ध लोगों में अपनी चरम पूर्ति तक पहुंच गई है। आसान है, और यहीं पर हमें उन विषयों में से एक का कुछ समापन मिलता है जो बिल्कुल स्पष्ट रूप से उभरता नहीं दिख रहा था, और वह भूमि और सृजन का विषय है। अध्याय 21 श्लोक 1, एक अर्थ में, इस खंड के शेष भाग को समझने के लिए एक सारांश प्रदान करता है।

और अध्याय 21 और श्लोक 1 में, फिर मैंने एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी देखी। क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी मिट गई, और समुद्र भी न रहा। यह स्पष्ट रूप से, फिर से, यशायाह अध्याय 65 और नई सृष्टि पाठ से लगभग शब्द दर शब्द है, जिसमें आकाश और पृथ्वी का उल्लेख उत्पत्ति अध्याय 1 और 2 में होता है। तो अब, पहली रचना के अनुरूप, जहां भगवान एक वातावरण बनाता है, अपने लोगों के रहने के लिए उपयुक्त भूमि, जहां भगवान उनके बीच में रहेंगे, अब एक नए रचनात्मक कार्य में, उत्पत्ति 1 और 2 की निरंतरता में, यशायाह अध्याय 65 की पूर्ति में, अब जॉन नई रचना देखता है लोगों के लिए एक उपहार के रूप में, लोगों को दिए गए आशीर्वाद के रूप में उभर रहा है।

वास्तव में, बाद में श्लोक 7 में, एक नई सृष्टि की इस दृष्टि के लिए एक उपदेशात्मक निष्कर्ष के रूप में, श्लोक 7 कहता है, जो लोग जीतेंगे उन्हें ये चीजें विरासत में मिलेंगी। विरासत की भाषा पर ध्यान दें, जैसा कि हमने कहा, इसराइल में इब्राहीम और उसके पूर्वजों को भूमि विरासत में मिली थी। परन्तु अब यह कहता है, कि जो जय प्राप्त करेंगे वे इन वस्तुओं को प्राप्त करेंगे।

क्या चीजें? इस नई सृष्टि और नई वाचाओं का वर्णन 21, 1 से 4 में किया गया है। इसलिए अब परमेश्वर के लोगों को इज़राइल की वादा की गई भूमि विरासत में नहीं मिली है, लेकिन अब उन्हें नई रचना विरासत में मिली है। सृष्टि के लक्ष्य और चरमोत्कर्ष का उद्घाटन ईसा मसीह के द्वारा

हुआ। वह भूमि जो इज़राइल को दी गई थी, वह स्वयं उत्पत्ति 1 और 2 की मूल रचना को प्रतिबिंबित करती थी, अब वह नई रचना, नए आकाश और नई पृथ्वी में अपना अंतिम चरमोत्कर्ष और अभिव्यक्ति पाती है, जिसे जॉन इस अंतिम अध्याय में देखता है रहस्योद्घाटन का।

हालाँकि, यह प्रदर्शित करने के लिए कि जॉन न केवल यशायाह अध्याय 65 तक, बल्कि मूल रचना तक भी जाता है, अध्याय 22, 22 के पहले दो अध्याय हैं। फिर स्वर्गदूत ने मुझे दिखाया, कि जॉन को एक दर्शन हो रहा था, जो कि सामान्य विशेषता है सर्वनाशी दर्शन एक अलौकिक देवदूत के लिए थे जो व्यक्ति को एक दूरदर्शी दौरे पर ले जाए, और इसलिए अब देवदूत उसे ले जाता है और उसे कुछ दिखाता है। तब स्वर्गदूत ने मुझे दिखाया, प्रकाशितवाक्य 22,1, मुझे क्रिस्टल के समान चमकीली जीवन के जल की नदी दिखाओ, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर नगर की सड़क के मध्य से होकर बहती है।

नदी के दोनों ओर जीवन का वृक्ष है, जिसमें 12 प्रकार के फल हैं, जो हर महीने फल देता है, और उसके पेड़ों की पत्तियाँ राष्ट्र के उपचार के लिए हैं। अब, नई रचना की सभी विशेषताओं पर ध्यान दें, कि वास्तव में वे ईजेकील 47 के माध्यम से आते हैं, प्रकाशितवाक्य 21 और 22 का यह भाग, अध्याय 40 से 48 में ईजेकील के दृष्टिकोण पर आधारित है, इसलिए यह स्पष्ट रूप से ईजेकील 47 पर आधारित है, लेकिन ईजेकील 47 ही उत्पत्ति 1 और 2 पर वापस जाता है, और जॉन स्वयं उत्पत्ति 1 और 2 पर वापस जाता है, जीवन के वृक्ष के स्पष्ट संदर्भ के साथ, जो यहजेकेल के पास नहीं है, यहजेकेल के पास कई पेड़ हैं, लेकिन यहां केवल जॉन के पास जीवन के वृक्ष का पेड़ है जीवन, उत्पत्ति अध्याय 2 का एक स्पष्ट संकेत, और जीवन के वृक्ष का उल्लेख, इसलिए उत्पत्ति 2 में बगीचे से बहने वाले पानी का विचार, और सभी फलदायी, जीवन का वृक्ष, यह सब सुझाव देता है कि जॉन ने ईडन में वापसी के रूप में नई रचना की कल्पना की, इसलिए उत्पत्ति 1 और 2 में, भूमि को एक उपयुक्त वातावरण, आशीर्वाद और जीवन की जगह, एक ऐसी जगह के रूप में, उसकी रचना के लिए भगवान के इरादे की लंबे समय से प्रतीक्षित पूर्ति ईश्वर की उपस्थिति उसके लोगों के साथ रहती थी, जो अब प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 और 22 में नई सृष्टि की एडेनिक-जैसी स्थितियों में पूरी हो गई है। एक तरफ, लेकिन यह अभी भी नई रचना और भूमि के मूल भाव से संबंधित है, इसके बारे में क्या? यह उल्लेख अध्याय 21.1 में है, जहां समुद्र अब नहीं है, लेखक

ने कहा, मैंने एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी देखी, क्योंकि यशायाह 65 की पूर्ति में पहले स्वर्ग और पृथ्वी का निधन हो गया था, लेकिन फिर वह जोड़ता है, और समुद्र अब नहीं था, जो आपको यशायाह अध्याय 65 में नहीं मिलता है, और मैं अक्सर सोचता था, जॉन ने इसे एक नई रचना के अपने दृष्टिकोण के एक हिस्से के रूप में क्यों शामिल किया है? इसने कुछ लोगों को परेशान कर दिया है, जिनमें मेरी पत्नी भी शामिल है, जिन्हें समुद्र पसंद है और वे सोच रहे हैं कि क्या नई सृष्टि में महासागर होंगे? लेकिन मुझे लगता है कि हमें यह समझने की ज़रूरत है कि जॉन इस छवि के साथ क्या कर रहा है।

पहचानने वाली पहली बात अन्य पुराने नियम के ग्रंथों के अनुरूप है और सर्वनाशी साहित्य के अनुरूप है जो जॉन से मिलता जुलता है, समुद्र अक्सर बुराई और अराजकता का प्रतीक था, जो कि भगवान के लोगों के विरोध में था, जो भगवान के लोगों के लिए परेशानी का कारण था, और इसलिए यह कल्पना करके कि समुद्र अब नहीं रहा, मुझे लगता है कि जॉन बस यह कह रहा है, नई सृष्टि में वह सब कुछ जो भगवान के उद्देश्य का विरोध करता था, जो अराजक और दुष्ट था, और भगवान के लोगों के लिए परेशानी का कारण था, अब हटा दिया गया है, ताकि जॉन ऐसा कर सके न केवल यह कहना है कि समुद्र अब नहीं रहा, बल्कि वह यह भी कहने जा रहा है, दर्द में रोना और शोक अब नहीं रहे, क्यों? क्योंकि समुद्र हटा दिया गया है, समुद्र अब नहीं है, नई सृष्टि की परेशानी, और अराजकता और बुराई हटा दी गई है, वे अब नहीं हैं, इसलिए अध्याय 21 में परेशानी और दुःख और शोक और दर्द भी नहीं रहे। श्लोक 4. लेकिन इसे थोड़ा और आगे बढ़ाने के लिए, मुझे लगता है कि जॉन, इसके अलावा, और इसके संबंध में, एक और मूल भाव को भी उजागर कर रहा है, और वह यह है कि पुराने नियम में आपको हटाने की धारणा कहां मिलती है पानी जो परमेश्वर के लोगों को उनकी विरासत में प्रवेश करने के लिए खतरा और बाधा उत्पन्न करता है? पलायन. वास्तव में, यह यशायाह, भविष्यवक्ता यशायाह की पुस्तक है, जो न्यू एक्सोडस थीम के साथ सबसे स्पष्ट रूप से प्रतिध्वनित होती है, और भविष्यवक्ता यशायाह के माध्यम से, आप पानी के सूखने, पानी के विभिन्न निकायों के गायब होने का यह विषय पाते हैं। इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण यशायाह अध्याय 51 में पाया जाता है, मुझे लगता है कि यह वही है जो मैं चाहता हूं, यशायाह अध्याय 51, जहां लेखक यह कहता है, यहां यह छंद 9 और 10 है, जागो, जागो, फिर से, का जिक्र करते हुए नए पलायन के रूप में इज़राइल की बहाली।

वह कहता है, जागो, जागो, शक्ति रखो, हे प्रभु की भुजा, जागो जैसे पुराने दिनों में था, जैसे तुमने निर्गमन में किया था, बहुत पहले की पीढ़ियों। क्या तू ही नहीं, जिस ने राहब को टुकड़े टुकड़े किया, और अजगर को छेदा? क्या तू ही नहीं, जिस ने समुद्र को, अर्थात् गहिरे जल को सुखा डाला, और छुड़ाए हुआ के पार जाने के लिये समुद्र की गहराइयोंको दूर कर दिया? अब, जो दिलचस्प है वह राहब और ड्रैगन का संबंध है, जो समुद्र के साथ अराजक जानवर की आकृतियाँ हैं। अपोकैल्पिक-प्रकार के साहित्य और अन्य साहित्य में समुद्र को अराजकता और बुराई के स्थान के रूप में जानवर या ड्रैगन प्रकार या जानवर-प्रकार, सर्प प्रकार की आकृतियों के साथ जोड़ना आम बात थी।

और जो और भी दिलचस्प है, वह है यशायाह अध्याय 51 का तरगुम, पुराने नियम का अरामी व्याख्या, यशायाह 51 का तरगुम राहाब और ड्रैगन को फिरौन के रूप में पहचानता है। तो यहाँ यशायाह अध्याय 51 में, लेखक ने निर्गमन और समुद्र के लुप्त होने और सूखने को ड्रैगन और राहब से जुड़ी अराजकता और बुराई के स्थान के रूप में जोड़ा है, यह ड्रैगन-प्रकार, सर्प-प्रकार, जानवर प्रकार की आकृति है . इसलिए पहले निर्गमन को एक नई रचना के रूप में देखा गया था जहां भगवान ने मुसीबत और बुराई और अराजकता के खतरे को दूर करने में बुराई और अराजकता पर काबू पा लिया था ताकि लोग आगे बढ़ सकें और अपने में प्रवेश कर सकें... छुड़ाए गए लोग अपने में पार कर सकें विरासत।

अब जॉन जो कर रहा है वह उस नए निर्गमन विषय को उठा रहा है और उसी तरह कह रहा है, लाल सागर, उसी तरह भगवान ने उनके पहले निर्गमन में और यशायाह 51 और अन्य में एक नए निर्गमन की प्रत्याशा को पूरा करने में ऐसा किया था। यशायाह पाठ, अब प्रकाशितवाक्य 21 में, भगवान एक बार फिर अराजकता और बुराई और संकट और परेशानी के लाल सागर को सुखा देते हैं जो भगवान के लोगों के लिए अपनी भूमि का आनंद लेने में बाधा बनते हैं। वह उसे हटा देता है ताकि अब परमेश्वर के लोग अपनी विरासत, अध्याय 21, पद 7, अपनी विरासत, जो कि नई सृष्टि है, में प्रवेश कर सकें। और इसलिए फिर, जॉन द्वारा एक नई रचना देखने से कहीं अधिक यहां चल रहा है, यह स्पष्ट रूप से एक लंबी कहानी का अंत है जो उत्पत्ति 1 और 2 तक

जाती है, सृष्टि, निर्गमन और भगवान की स्थापना के माध्यम से अपना रास्ता बनाती है भूमि में उसकी प्रजा इस्राएल की और अब इसका चरमोत्कर्ष प्रकाशितवाक्य 21 और 22 की नई रचना में मिलता है।

शेष दो विषय, मंदिर का विषय, प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में स्पष्ट है, हालाँकि जॉन इसके साथ कुछ बहुत अलग करता है। मंदिर की पूर्णता और स्थापना का संकेत पहले से ही श्लोक 3 में दिया गया है। जिसे हमने अभी नई वाचा के साथ पढ़ा है।

और वैसे, यहजेकेल 37 में, जहां जॉन को नई वाचा की भाषा मिलती है, यहजेकेल नई वाचा को भगवान के निवास के साथ, मंदिर के विषय से जोड़ता है। यूहन्ना कहता है, वैसे ही अब मैंने सिंहासन में से यह शब्द सुना, कि डेरा देख, परमेश्वर का निवास मनुष्यों के बीच में है, वह उनके साथ वास करेगा। यह निवास स्थान लेने की क्रिया है, जिसका उपयोग भगवान द्वारा अपने मंदिर में निवास करने के लिए किया जाता है।

परमेश्वर उनके साथ निवास करेगा, वे उसके लोग होंगे, परमेश्वर स्वयं उनके साथ रहेगा, वाचा का सूत्र। इसलिए 21.3 स्पष्ट रूप से एक नवीनीकृत मंदिर, ईजेकील 40-48 की भविष्यवाणी की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए अपने मंदिर को पुनर्स्थापित करने के भगवान के इरादे को प्रसारित करता है। अब जॉन देखता है कि यह पूरा हो रहा है, फिर भी ऐसा होने का तरीका बहुत अलग है।

अधिकांश यहूदी सर्वनाशों में, उन सभी में जो समानता है वह यह है कि वे पुराने नियम की भविष्यसूचक दृष्टि के अनुरूप, एक भौतिक मंदिर के जीर्णोद्धार की कल्पना करते हैं। फिर भी जॉन असमंजस में है, जॉन भविष्यसूचक पाठ से असहमत है, लेकिन वह एक शहर की सामान्य ग्रीको-रोमन वास्तुकला और एक शहर के लेआउट से भी असहमत होता। जब जॉन अंततः अध्याय 21 और श्लोक 22 में शहर के केंद्र में पहुँचता है, तो जॉन कहता है, और मैंने शहर में कोई मंदिर नहीं देखा।

तो, जॉन के शहर में कोई मंदिर नहीं है। क्यों? वह आगे कहता है और कहता है क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेम्ना इसका मंदिर हैं। दूसरे शब्दों में, मंदिर ने जो महसूस किया और प्रतीक बनाया, वह मंदिर एक लघु ईडन की तरह था और पूरी सृष्टि के लिए भगवान ने जो इरादा किया था उसका एक सैपशॉट था, अब साकार हो गया है।

अब पाप और बुराई को हटा दिया गया है, अब एक नई सृष्टि है, वही चीज़ जिसके लिए सबसे पहले एक मंदिर की आवश्यकता थी, वह पाप है और बुरी शक्तियों के प्रभुत्व के तहत एक दुनिया है, अब जब उसे हटा दिया गया है, तो वहाँ है अब अलग मंदिर की जरूरत नहीं। तो, जॉन कहते हैं, पुराने नियम के दर्शन और भविष्य के अन्य सर्वनाशकारी दर्शन के विपरीत, जो उन्होंने पारंपरिक ग्रीको-रोमन शहर में पाया होगा, उसके विपरीत, अब जॉन को एक अलग मंदिर नहीं दिखता है। क्यों? क्योंकि अब इसकी जरूरत नहीं है।

पूरा शहर भगवान की उपस्थिति से इतना प्रभावित है कि अब एक अलग मंदिर की आवश्यकता नहीं है। और फिर, पाप और बुराई को हटा दिया गया है। लेकिन जॉन इससे भी आगे निकल जाता है, दिलचस्प बात यह है कि वह मंदिर की कल्पना करता है, हालांकि, एक अर्थ में, वहाँ अभी भी एक मंदिर है।

हां, कोई अलग मंदिर नहीं है, लेकिन एक अर्थ में, वहाँ अभी भी एक मंदिर है, क्योंकि जॉन ने मंदिर की कल्पना ईजेकील 40 से 48 तक ली है। याद रखें, ईजेकील 40 से 48 काफी हद तक एक पुनर्स्थापित मंदिर के विवरण के लिए समर्पित था। अब जॉन इसे शहर पर लागू करता है।

तो प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में जो मापा जाता है वह मंदिर नहीं है, जैसा कि आप यहेजकेल में पाते हैं, लेकिन जो मापा जाता है वह शहर ही है। वह शहर, जिसके बारे में हमने कहा था कि वह लोगों का प्रतीक है, अब मंदिर है। पूरा शहर, जो लोग हैं, एक भव्य मंदिर है जहां भगवान अब निवास करते हैं, जहां अब भगवान की उपस्थिति पाई जाती है।

दूसरे शब्दों में, जॉन प्रतिबिंबित कर रहा है, संपूर्ण रूप में, जॉन मूल रूप से वही प्रतिबिंबित कर रहा है जो अन्य नए नियम के लेखक कह रहे थे, कि लोग स्वयं मंदिर थे, कि लोगों का निर्माण किया जा रहा है। शायद हम पॉल और पीटर को निर्माण की प्रक्रिया को देखते हुए देख सकते हैं, और अब इमारत प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में पूरी हो गई है। जॉन पूर्ण लोगों के मंदिर, लोगों के मंदिर, शहर के मंदिर को भगवान की उपस्थिति के स्थान, की पूर्ति के रूप में देखता है। अपने लोगों के साथ रहने का परमेश्वर का इरादा ईडन गार्डन तक जाता है।

वास्तव में, ऐसी अन्य विशेषताएं हैं जो बताती हैं कि यह एक मंदिर है। ध्यान दें, जब आप इसे पढ़ते हैं, तो सोना कितनी बार एक फीचर निभाता है। आप सोने की सड़कों से परिचित हैं, लेकिन श्लोक 18 में शहर शुद्ध सोने का है।

सोने की सड़कें हैं। सोना पुराने नियम के मंदिर की विशेषताओं में से एक था। निर्गमन 25 और उसके बाद, 1 राजा 5-7 पर वापस जाएँ।

लेकिन फिर भी, सोना पूरी तरह से सृजन में वापस चला जाता है। सोना ईडन गार्डन में पाई जाने वाली बहुमूल्य धातुओं में से एक है। तो यह तथ्य कि शहर सोने से चमकता है, यह बताता है कि यह मंदिर है, भगवान का निवास स्थान है।

अध्याय 21 और श्लोक 16 में, शहर का आकार एक घन जैसा है। शहर चौकोर स्थित है। इसकी लंबाई इसकी चौड़ाई के समान है।

वह भाषा परमपवित्र स्थान के वर्णन से निकलती है। यह कोई वास्तुशिल्पीय विशेषता नहीं है जिस पर जॉन सिर्फ अपने लिए जोर देने की कोशिश कर रहा है, बल्कि यह 1 किंग्स में परमपवित्र स्थान के वर्णन को दोहराता है। इसकी लंबाई और चौड़ाई बराबर थीं।

यह घन के आकार का है. तो अब, शहर को घन-आकार के रूप में चित्रित करके, फिर से, सभी मंदिर की कल्पना अब भगवान के शहर पर लागू की जाती है। मंदिर के निर्माण में जिन कीमती पत्थरों का उपयोग किया गया था वे अब शहर का हिस्सा हैं।

तो फिर, जॉन क्या कह रहा है? सृष्टि में अपने लोगों के साथ रहने का ईश्वर का सच्चा इरादा पाप के कारण विफल और बर्बाद हो गया था, लेकिन जो मंदिर की स्थापना के साथ साकार होना शुरू हुआ, जो इंगित करता था वह अंततः एक भौतिक मंदिर की बहाली में साकार नहीं होता है, लेकिन उत्पत्ति 1 और 2 में सृष्टि की तरह, ईश्वर एक नई रचना में अपने लोगों के बीच में निवास कर रहा है। अंतिम विषय, राजत्व और शासन, अध्याय 22 और छंद 3 और 5 में उभरता है। इस शहर-स्लैश-मंदिर, लोग-शहर-स्लैश-मंदिर-स्लैश नई रचना के अंतिम विवरण में, जॉन कहते हैं, कुछ भी नहीं वहां शापित फिर पाए जाएंगे, परन्तु परमेश्वर और मेमे का सिंहासन उस में होगा, और उसके दास उनको दण्डवत् करेंगे। फिर से ध्यान दें, सिंहासन राजत्व और शासकत्व की छवि के रूप में है।

परन्तु फिर पद 5, और फिर रात न होगी, वे परमेश्वर के लोग जो वहां रहते हैं, उन्हें दीपक या सूर्य के प्रकाश की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उनका प्रकाश होगा, और वे सर्वदा के लिये राज्य करेंगे। उत्पत्ति 1 और 2, कि उसके लोग पृथ्वी को उसकी महिमा से भर देंगे और प्रतिनिधित्व करेंगे, जैसे उसके छवि-वाहक उसके शासन का प्रतिनिधित्व करते हैं और उसके शासन को पूरी सृष्टि में फैलाते हैं। अब उसके लोग एक नई सृष्टि में सदैव शासन करते हैं। तो, प्रकाशितवाक्य 21 और 22 हमें एक लंबी कहानी के अंत में लाता है, अपने लोगों और पूरी सृष्टि के साथ परमेश्वर के छुटकारे के व्यवहार की एक लंबी कहानी के चरमोत्कर्ष पर।

एक कहानी जो उत्पत्ति 1 और 2 से शुरू होती है, जहां भगवान एक वाचा के रिश्ते में प्रवेश करने के लिए लोगों की रचना करते हैं। वह उन्हें एक भूमि देता है, उनके रहने के लिए एक भूमि, एक वातावरण बनाता है, उन्हें आशीर्वाद के स्थान के रूप में देता है। भगवान उनके बीच में निवास करेंगे.

उनका आदेश, उनके लिए भगवान का इरादा यह है कि वे, उनके छवि-वाहक के रूप में, भगवान के शासन का प्रतिनिधित्व कर सकें और पूरी सृष्टि में उनकी महिमा फैला सकें। फिर भी वह इरादा विफल हो जाता है ताकि भगवान...बाइबिल का बाकी हिस्सा यह है कि भगवान उत्पत्ति 1 और 2 से अपने मूल इरादे को कैसे पूरा करना चाहता है। भगवान मानवता के लिए अपने इरादे को कैसे बहाल करेगा जिसके साथ वह एक अनुबंधित रिश्ते में रहता है, जो जीवित है किसी देश में, आशीर्वाद का वह स्थान जो परमेश्वर उन्हें देता है? ईश्वर उनके बीच में निवास करता है, और मानवता पूरी सृष्टि पर शासन करती है और ईश्वर के शासन को पूरी सृष्टि में फैलाती है। वह कहानी जो पुराने और नए नियम से होकर गुजरती है, जिसमें कभी-कभी विराम और शुरुआत होती है, लेकिन जिसका उद्घाटन यीशु मसीह और उनके लोगों में होता है, अब प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में भगवान के मंदिर में निवास के साथ अपनी पूर्णता पाती है। अपने लोगों के साथ, एक नई पृथ्वी पर, एक नई सृष्टि में, अपने लोगों के साथ नई वाचा के रिश्ते में रहते हुए, मानवता के साथ पूरी सृष्टि पर शासन करने के उद्देश्य को पूरा करते हुए।